

class - B.A. Part - II

Sub - Hindi (Hons) Paper - II

Q - ~~Answer the~~

हायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों

का उल्लेख करें।
हिन्दी साहित्य जगत में हायावाद का आरंभ 1918 ई. में अंत 1938 ई. माना जाता है। हायावादी काव्य की निम्न लिखित प्रवृत्तियाँ हैं -

(क) वैयक्तिकता — दो महायुद्धों के बीच बढ़ते औद्योगिकरण और धार्मिक सामाजिक रुढ़ियों के वातावरण के प्रति लोगों के भीतर सुलगते विद्रोह के भाव ने उनके परंपरा से दूरकर नए सिरे सोचने के लिए समझाया। कवि-गण बाहरी दुनिया के साथ-साथ अपने सुख-दुःख को भी सुनाने के लिए बेचैन हुए। परिणामतः हायावादी कविता बहिर्मुखी न होकर अन्तर्मुखी होली गयी। प्रसाद की निम्न पंक्तियाँ प्रष्टव्य हैं -

८ ले चल वहाँ मुलावा देकर
मेरे नाविक चौर-चौर, ४

(ख) सौंदर्य और प्रेम — हायावादी कवि स्वभाव से संवेदनशील थे। उनके प्रकृति और नारी का सौंदर्य आकृष्ट करवाया। उनके काव्य में नारी और प्रकृति के बड़े आकर्षक चित्रण हैं। कामायनी में शब्दों के सौंदर्य का वर्णन प्रसाद ने निम्न रूप में किया है -

५ नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल आदखिला अंग
सला हो ज्यों बिजली का झल
मेघ बन बीच गुआवी रंग, ४

(ग) प्रकृति चित्रण — दयावादी कवि ने प्रकृति का बड़ा सुंदर चित्रण किया है। दयावादी कवि श्री सुमित्रा नंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाना है। उनकी निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

५ प्रथम रश्मि का आना रंमिनी,
तूने कैसे पहचानी ।

कहीं-कहीं हो बाल बिहंगिनी

पाया तूने यह मामा , ७

(घ) राष्ट्रीय भावना — दयावादी कवि की कविता में देश प्रेम व राष्ट्र प्रेम की भावना भी अभिव्यक्त हुई है। प्रसाद की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं

८ हिमाद्रि तुंग-शृंग से

पुष्प पुष्प मारती

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला

स्वतंत्रता पुकारती , ७

(ङ) भाषा तथा शैलीगत विशेषताएँ — डा० नगेन्द्र ने दयावाद को ८ स्तूपों के प्रति सूक्ष्म का विमोह कहा है। विभिन्न आलोचकों ने दयावाद की द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता का परिणाम बताया है। स्वयं कवि प्रसाद ने संस्कृत उद्योगों के साक्ष्य पर दया की व्याख्या की है।

(च) रहस्यवाद — दयावादी कवियों ने प्रकृति में चेतना का आरोप किया है। उन्हें कण-कण में अनंत सत्ता की उपस्थिति प्रतीत होती है। इनमें इस परम सत्ता से वियोग की वेदना है।